भाग–1
(बिन्दु 1 से 4 तक)

विवरणिका

बिन्दु सं0	विषय	पृष्ठ संख्या	
		से	तक
	प्रस्तावना		
1	संगठन की विशिष्टियाँ कृत्य और कर्तव्य।		
2	अधिकारियों और कर्मचारियों की शक्तियाँ और कर्तव्य।		
3	विनिश्चय करने की प्रक्रिया में पालन की जाने वाली प्रक्रिया जिसमें पर्यवेक्षण और उत्तरदायित्व के माध्यम सम्मिलित हैं।		
4	कृत्यों के निर्वहन के लिए स्वयं द्वारा स्थापित मापमान।		

परिचय

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (पूर्ववर्ती यू0पी0 एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी) की स्थापना संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के लैण्ड ग्राण्ट पद्धति पर तराई स्टेट फार्म की 16000 एकड़ भूमि पर वर्ष 1960 में की गयी। 17 नवम्बर, 1960 को इसका लोकार्पण करते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने यह उद्‌गार व्यक्त किए थे कि इस विश्वविद्यालय के स्नातक कृषकों की सहायता के साथ–साथ भारतीय कृषि को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करेंगे।

सम्प्रति, विश्वविद्यालय में 08 (आठ) संघटक महाविद्यालय यथा कृषि, गृह विज्ञान, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान, विज्ञान एवं मानविकी, प्रौद्योगिकी, मत्स्य विज्ञान, स्नातकोत्तर तथा कृषि व्यवसाय प्रबंधन हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में एक इंटरनेश्नल स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर भी स्थापित किया गया है। मानवीय मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति से संबंधित ज्ञान की अभिवृद्धि के निमित्त लिब्रल एजुकेशन (Liberal Education) कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न कोर्स वैकल्पिक रूप से पढाने की भी व्यवस्था है। वर्तमान में 14 स्नातक एवं 123 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के 62 विभागों द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। एक वर्ष में सर्वाधिक 200 शिक्षण दिवस इस विश्वविद्यालय की विशेषता है। अब तक विश्वविद्यालय से लगभग 23 हजार विद्यार्थियों ने विभिन्न उपाधियाँ यथा, स्नातक, स्नातकोत्तर तथा परास्नातक प्राप्त की हैं तथा देश एवं विदेश के कई सम्मानित संस्थानों में शीर्ष पदों पर सुशोभित हैं। यह सब विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न विषयों के प्रयोगात्मक आधार पर पढ़ाए जाने के सुपरिणाम हैं। विश्वविद्यालय द्वारा सर्वप्रथम आरम्भ किए गए इस प्रयोग का अनुकरण अब देश के अन्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा भी किया जा रहा है। इस क्रम में कृषि महाविद्यालय द्वारा एक समान सत्र में संचालित 'रुरल एग्रीकल्चरल वर्क एक्सपीरिएंस' कार्यक्रम निश्चय ही एक सराहनीय प्रयास है।

सब्जी, फूलों, फलों एवं चारे की अधिक उपज वाली प्रजातियों के विकास के माध्यम से विश्वविद्यालय ने देश में हरित क्रान्ति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। विश्वविद्यालय ने उत्तम किस्म के बीज व तकनीकों को उपलब्ध कराकर देश के कृषकों, विशेषकर उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश के किसानों की जीवन शैली में क्रान्तिकारी रुपान्तरण

किया है। गेहूँ की कुछ प्रजातियाँ यथा सोनालिका (आर0आर021), कल्याण सोना (सोना 227) व यू0पी0 262 को पड़ोसी राष्ट्रों ने भी अपनाया है। इस तथ्य की अभिस्वीकृति नोबेल पुरस्कार विजेता डा0 नारमन ई0 बोरलाग, प्रोफेसर एम0 एस0 स्वामीनाथन व अन्य शिष्टजनों द्वारा की जा चुकी है।

विश्वविद्यायल में विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा पोषित 270 परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है। उत्तराखण्ड की कृषि–पारिस्थितिकी तथा कार्य प्रणाली के दृष्टिगत विश्वविद्यालय में जैविक खेती, जैव विविधता संरक्षण, विभिन्न फल, फूल, सब्जी पर संरक्षित खेती, पुष्प उत्पादन, औद्यानिकी फसलों, कृषि वानिकी, जैव उर्वरकों से संबंधित शोध परियोजनाएं संचालित हैं। उपयोगी जनन द्रव्य के संकलन एवं संरक्षण हेतु पादप जनन द्रव्य संसाधन केंद्र की स्थापना भी विश्वविद्यालय में की गई है।

विश्वविद्यालय में जन–संचार एंव किसान मेलों का आयोजन वर्ष में दो बार खरीफ एवं रबी मौसम में किया जाता है जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय में विकसित बीजों की बिक्री एवं तकनीकी हस्तांतरण पर विशेष बल दिया जा रहा है। इन किसान मेलों में देश के विभिन्न प्रान्तों के अलावा नेपाल आदि पडोसी देशों से भी भारी संख्या में कृषक प्रतिभाग करते हैं। राज्य में विश्वविद्यालय के अधीन 09 (नौ) कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से विभिन्न प्रसार गतिविधियों का संचालन कुशलतापूर्वक किया जा रहा है साथ ही विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र (एटिक) की भी स्थापना की गई है जिसके माध्यम से एकल खिडकी व्यवस्था के अंतर्गत आगन्तुक कृषकों को कृषि निवेशों जैसे बीज, फल व सब्जी पौध, बायोएजेन्ट, कृषि साहित्य आदि को उपलब्ध कराया जाता है। किसानों एवं अधिकारियों हेतु वर्ष पर्यन्त प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने हेतु प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई की स्थापना भी की गयी है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिकाएं 'किसान भारती' एवं 'इंडियन फार्मर्स डायजेस्ट' तथा त्रैमासिक पत्रिका 'पंत प्रसार संदेश' का भी प्रकाशन किया जाता है जो किसानों में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। विश्वविद्यालय में पंतनगर जनवाणी के नाम से स्थापित सामुदायिक रेडियो सेवा के प्रसारित कार्यक्रम विश्वविद्यालय की 20 किलोमीटर की परिधि में स्थित समुदाय एवं किसानों में अत्यंत लोकप्रिय हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त पारम्परिक

स्नातक शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा हेतु मार्च 2015 तक 218 पुस्तकों का हिन्दी में प्रकाशन किया गया है, जिनमें से 24 पुस्तकों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

यह विश्वविद्यालय बहुत ही सौभाग्यशाली है क्योंकि इसकी स्थापना के समय से ही इसे पंडित गोविन्द बल्लभ पंत, डॉ0 एस0 राधाकृष्णन, पंडित जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इंदिरा गाँधी, डॉ0 वी0वी0 गिरि, ज्ञानी जैल सिंह, श्री चन्द्र शेखर, श्री आई0के0 गुजराल, श्री सी0 सुब्रमण्यम, श्री नारायण दत्त तिवारी, डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों का संरक्षण एवं शुभकामनाऐं प्राप्त हैं। तराई स्टेट फार्म एवं इस विश्वविद्यालय के विकास में मेजर एच0एस0 संधू, श्री ए0एन0 झा, श्री एच0 डब्ल्यू0 हान्ना, श्री डब्ल्यू0बी0 लैम्बर्ट तथा श्री के0ए0पी0 स्टीवेंसन की भूमिकाऐं विशेषरुप से उल्लेखनीय रही हैं।

कृषि एवं ग्राम्य विकास में विशिष्ट योगदान के अभिज्ञान में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा इस विश्वविद्यालय को वर्ष 1997 में **'बेस्ट इन्स्टीट्यूशन अवार्ड'** तथा **'सरदार पटेल आउटस्टेंडिंग एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूशन अवार्ड 2005'** द्वारा विभूषित किया गया है। **अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सी0जी0आई0ए0आर0 ने धान–गेहूँ फसल प्रणाली अनुसंधान में उत्कृष्ट योगदान के लिए इस विश्वविद्यालय को सम्मानित किया है।**

विश्वविद्यालय ने राष्ट्र–सेवा के लगभग 54 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिए हैं तथा उत्तराखण्ड राज्य एवं राष्ट्र विकास की इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है।